Microfinance Institutions Network (MFIN)

ESAF SFB case study

Coverage Report

November 2019

Media Coverage Index

ESAF SFB helps in transforming lives in Madhya Pradesh

S. No.		Media
1.	Dainik Jagran	Print
2.	Haribhoomi	Print
3.	Raj Express	Print
4	Dainik Naidunia	Print
5.	Dabang Dunia	Print
6.	Swadesh	Print
7.	Yug Pradesh	Print
8.	Central Chronicle	Print
9.	Samay Jagat	Print
10.	Sandhya Prakash	Print
11.	Vinay Ujala	Print

Publication	Dainik Jagran
Edition	Betul
Date	12th November, 2019
Page No.	07

महिला उद्यमियों को आर्थिक स्वतंत्र बना रहा ईएसएएफ एसएफबी

बैतूल, जेएनएन। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। आज ना सिर्फ वो खुद के बलबूते पर एक व्यवसायी बन चुकी हैं, बल्कि अपने जैसी अन्य महिलाओं को नौकीर पर भी रखना चाहती हैं जो उनकी तरह किस्मत की मारी हैं। लक्ष्मीबाई कहती हैं, मैं ईएसएएफ की एहसानमंद हूं, जिसकी मदद से मैं अपने बूढ़े माता-पिता और भाई की देखभाल कर सकी, कुछ समय पहले तक में इन पर ही निर्भर थी। ईएसएएफ ने मुझे मेरी बदकिस्मती से बाहर निकाला और एक बेहतर जिंदगी के साथ ही समाज में सम्मानजनक स्थान भी दिलाया है।

Publication	Haribhoomi
Edition	Betul
Date	12th November, 2019
Page No.	04

लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ईएसएएफ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बैतूल

माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी, शादी के 6 महीने बाद ही, लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता-पिता और भाई के पास रहने के लिए छोड़ दिया। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। लेकिन एक उच्च आत्म सम्मान वाली महिला होने के नातेए वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी। अपने टोकरी बनाने के हुनर को जानते हुए लक्ष्मीबाई ने खुद से कमाने का फैसला किया। जैसा कि कहावत है जहां चाह, वहां राह, लक्ष्मीबाई को ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक और इस कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला।

ESAF
ESAF SMALL FINANCE BANK

प्रति सप्ताह आमदनी 3000 से 4000 रुपए हो गई

इसके बाद लक्ष्मीबाई ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और अपना प्रथम आय सृजन ऋण प्राप्त किया। उन्होंने 7000 रुपए का यह ऋण 2009 में प्राप्त किया और इस राशि की मदद से उन्होंने टोकरी बनाने के लिए कच्चे माल के लिए बांस की लकड़ी खरीदी। इसके बाद जल्द ही टोकरी, फूलदान आदि बनाकर बेचने लगी और धीरे-धीरे उसी कच्चे माल से अन्य उपयोगी सामान भी बनाने लगी। उनके उत्पाद बाजार में जाते ही तुरंत पूरे बिक जाते। 2018 में अंततः 45000 रुपए का व्यवसाय ऋण लिया। ऋण राशि के बढ़ते जाने के साथ ही ना सिर्फ उनके उत्पाद भी बेहतर होने लगे, बल्कि उनकी आमदनी प्रति सप्ताह से बढ़ाकर 3000 से 4000 रुपए प्रति सप्ताह हो गई। आज ना सिर्फ वो खुद के बलबूते पर एक व्यवसायी बन चुकी हैं, बल्कि अपने जैसी अन्य महिलाओं को नौकरी पर भी रखना चाहती हैं जो उनकी तरह किस्मत की मारी हैं। अब तक ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक ने 15 राज्यों की लगभग 30 लाख महिलाओं को वित्तीय समावेशन के अंतर्गत शामिल किया है।

Publication	Raj Express
Edition	Betul
Date	13th November, 2019
Page No.	07

महिला उद्यमियों की आर्थिक सहायता कर रहा एसाफ एसएफबी

नई दिल्ली। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। शादी के 6 महीने बाद ही लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें छोड़ दिया अपने टोकरी बनाने के हुनर को जानते हुए लक्ष्मीबाई ने खुद से कमाने का फैसला किया। लक्ष्मीबाई को एसाफ एसएफबी और इस कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला। इसके बाद लक्ष्मीबाई एसाफ एसएफबी के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और अपना प्रथम आय सृजन ऋण प्राप्त किया। कर्ज की राशि की मदद से उन्होंने टोकरी बनाने के लिए कच्चे माल के लिए बांस की लकड़ी खरीदी और टोकरी, फूलदान आदि बनाकर बेचने लगी। इस तरह लक्ष्मीबाई की आय 600-700 रुपए प्रति सप्ताह से बढ़कर 3000-4000 प्रति सप्ताह हो गई।

Publication	Dainik Naidunia
Edition	Bhopal
Date	12th November, 2019
Page No.	09

मध्य प्रदेश के लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ईएसएफ एसएफबी

भोपाल। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी क्योंकि उनका पति उनके चेहरे को लेकर ताने मारता था और लगातार उन्हें आंखों के दोष के बारे में एहसास दिलाता रहता था। शादी के 6 महीने बाद ही, लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता-पिता और भाई के पास रहने के लिए छोड़ दिया। यहां भी पास-पड़ोस के लोग उनके माता-पिता को लक्ष्मीबाई के दुर्भाग्य के लिए सहानुभूति जताते थे जिससे उन्हें और भी तकलीफ होती थी। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। लेकिन एक उच्च आत्म-सम्मान वाली महिला होने के नाते, वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी।

Publication	Dabang Dunia
Edition	Betul
Date	20th November, 2019
Page No.	10

लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा ईएसएएफ

बैतूल। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मप्र के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 साल की उम्र में उनकी शादी हो गई। शादी के छह माह बाद ही लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता-पिता के पास रहने के लिए छोड़ दिया। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी, लेकिन वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी। अपने टोकरी बनाने के हुनर को जानते हुए लक्ष्मीबाई ने खुद से कमाने का फैसला किया। लक्ष्मीबाई को ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक और इस कंपनी की वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला। इसके बाद लक्ष्मीबाई ईएसएएफ स्माल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और अपना प्रथम आय सृजन ऋण प्राप्त किया। उन्होंने 7000 रुपए का यह ऋण 2009 में लिया और इस राशि की मदद से उन्होंने टोकरी बनाने के लिए कच्चे माल के लिए बांस की लकड़ी खरीदी। जल्द ही टोकरी, फूलदान आदि बनाकर बेचने लगी। 2018 में अंततः 45000 रुपए का व्यवसाय ऋण लिया। ऋण राशि के बढ़ते जाने के साथ ही ना सिर्फ उनके उत्पाद भी बेहतर होने लगे, बल्कि उनकी आमदनी प्रति सप्ताह से बढ़कर 3000 से 4000 रुपए हो गई। आज वो खुद के बलबूते पर एक व्यवसायी बन चुकी है बल्कि अपने जैसी अन्य महिलाओं को नौकरी पर भी रखना चाहती हैं। अब तक ईएसएएफ स्माल फाइनेंस बैंक ने 15 राज्यों की लगभग 30 लाख महिलाओं को वित्तीय समावेशन के अंतर्गत शामिल किया है।

Publication	Swadesh
Edition	Betul
Date	13th November, 2019
Page No.	02

मप्र के लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ईएसएएफ एसएफबी

बैतूल • मध्य प्रदेश, नवंबर 11, 2019 : माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी क्योंकि उनका पति उनके चेहरे को लेकर ताने मारता था और लगातार उन्हें आंखों के दोष के बारे में एहसास दिलाता रहता था। शादी के 6 महीने बाद ही, लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता-पिता और भाई के पास रहने के लिए छोड़ दिया। यहां भी पास-पड़ोस के लोग उनके माता-पिता को लक्ष्मीबाई के दुर्भाग्य के लिए सहानुभूति जताते थे जिससे उन्हें और भी तकलीफ होती थी।

Publication	Yug Pradesh
Edition	Betul
Date	12th November, 2019
Page No.	09

महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए कर रहा है सहायता

मप्र के लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ESAF SFB

बैतूल । माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी क्योंकि उनका पति उनके चेहरे को लेकर ताने मारता था और लगातार उन्हें आंखों के दोष के बारे में एहसास दिलाता रहता था। शादी के 6 महीने बाद लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता.पिता और भाई के पास रहने के लिए छोड़ दिया। यहां भी पास.पड़ोस के लोग उनके माता.पिता को लक्ष्मीबाई के दुर्भाग्य के लिए सहानुभूति जताते थे जिससे उन्हें और भी तकलीफ होती थी। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। लेकिन एक उच्च आत्म.सम्मान वाली महिला होने के नातेए वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी। अपने टोकरी बनाने के हुनर को जानते हुए लक्ष्मीबाई ने खुद से कमाने का फैसला किया। जैसा कि कहावत है ष्जहां चाहए वहां राहष् लक्ष्मीबाई को इस कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला।

Publication	Central Chronicle
Edition	Betul
Date	12^{th} November, 2019
Page No.	04

ESAF SFB helps in transforming lives in Madhya Pradesh

Tikari, (Betul)

Madhya Pradesh, November 11, 2019 : Microfinance is a mode for providing a promising future to the likes of Laxmibai Dolekar by making them financially secured. Born with a physical deformity in the eye in a poor household of a village called Tikari near Betul in Madhya Pradesh, Laxmibai had a very difficult childhood. Above all, she was married to a guy from a nearby village at an early age of 12 years.

Even after marriage, her life had no happiness as her husband taunted her for her looks thus constantly reminding her of her visual defect. Just after 6 months of her married life, her husband left her with her parents and brother for good. The neighbours sympathized with her parents on her misfortune which further disturbed her.

With shattered dreams and a troubled mind, Laxmibai continued to stay with her maternal side of the family but being a woman of high self-respect, she did not want to become a burden on them. Proficient in the art of basket weaving, Laxmibai thought of earning a living out of her talent and as the saying goes 'where there is a will, there is a way', Laxmibai became aware of ESAF SFB and it financial services.

She joined the self-help group of ESAF SFB and availed her first income generation loan (IGL) amount of Rs. 7000 in 2009 with which she purchased bamboo as raw material and quickly made baskets, flower vases etc. out of it. Soon, she started making more value added products using the same raw material and her products were easily sold out in the market.

Publication	Samay Jagat
Edition	Betul
Date	12th November, 2019
Page No.	02

मध्य प्रदेश के लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ईएसएएफ एसएफबी

बैतूल। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। लेकिन एक उच्च आत्म सम्मान वाली महिला होने के नाते वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी। अपने टोकरी बनाने के हुनर को जानते हुए लक्ष्मीबाई ने खुद से कमाने का फैसला किया। जैसा कि कहावत है जहां चाह वहां राह लक्ष्मीबाई को ईएसएएफ एसएफबी और इस कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला। इसके बाद लक्ष्मीबाई ईएसएएफ एसएफबी के स्वयं.सहायता समूह से जुड़ी और अपना प्रथम आय सृजन ऋण प्राप्त किया।

Publication	Sandhya Prakash
Edition	Betul
Date	14th November, 2019
Page No.	10

मप्र के लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है ईएसएएफ

बैतूल। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी क्योंकि उनका पति उनके चेहरे को लेकर ताने मारता था और लगातार उन्हें आंखों के दोष के बारे में एहसास दिलाता रहता था। शादी के 6 महीने बाद ही, लक्ष्मीबाई के पति ने उन्हें उनके माता-पिता और भाई के पास रहने के लिए छोड़ दिया। यहां भी पास-पड़ोस के लोग उनके माता-पिता को लक्ष्मीबाई के दुर्भाग्य के लिए सहानुभूति जताते थे जिससे उन्हें और भी तकलीफ होती थी। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। लेकिन एक उच्च आत्म-सम्मान वाली महिला होने के नाते, वो किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती थी।

Publication	Vinay Ujala
Edition	Betul
Date	12th November, 2019
Page No.	07

महिला उद्यमियों के लिए मददगार

बैतूल। माइक्रोफाइनेंस वह साधन है जिसके द्वारा लक्ष्मी दोलकर जैसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सुरक्षित बना कर एक उज्जवल भविष्य प्रदान किया जा सकता है। लक्ष्मीबाई ने मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के टिकारी गांव में रहने वाले एक गरीब परिवार में जन्म लिया था। जन्म से उनकी आंखों में दोष था। उनका बचपन काफी मुश्किलों में बीता। सिर्फ 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी पास के गांव में रहने वाले एक लड़के से करा दी गई। शादी के बाद भी उनके जीवन में कोई खुशी नहीं थी क्योंकि उनका पति उनके चेहरे को लेकर ताने मारता था और लगातार उन्हें आंखों के दोष के बारे में एहसास दिलाता रहता था। टूटे सपने और मानसिक तनाव के साथ लक्ष्मीबाई अपने मायके में रहने को मजबूर थी। जैसा कि कहावत है जहां चाहए वहां राह लक्ष्मीबाई को माइक्रो फाइनेंस कंपनी ईएसएएफ एसएफबी और इस कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में पता चला। उन्होंने कंपनी की मदद से कारोबार शुरू किया और आज सफलता की राह पर चल रही हैं।

THANK YOU